प्रातः क्लास 19/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

बच्चों को शिवबाबा याद है? स्वर्ग की बादशाही याद है? यहाँ जब बैठते हो तो दिमाग में आना चाहिए हम बेहद के बाप के बच्चे हैं और नित्य बाप को याद करते हैं। याद करने बिगर हम वर्सा ले नहीं सकते। काहे का वर्सा? पवित्रता का। तो इसके लिए ऐसा पुरुषार्थ करना है। कब भी कोई विकार की बात हमारे आगे नहीं आ सकती। सिर्फ विकार की भी बात नहीं। एक भी भूत नहीं; परंतु कोई भी भूत नहीं आ सकता। ऐसा अशुद्ध(शुद्ध) अहंकार रहना चाहिए। बहुत ऊँच ते ऊँच भगवान के हम बच्चे भी ऊँच ते ऊँच ठहरे ना। बात-चीत, चलन कितनी रॉयल होनी चाहिए। बाप चलन से समझते हैं यह तो बिल्कुल ही वर्थ नॉट ए पैनी है। मेरा बच्चा कहलाने का भी हकदार नहीं। लौकिक बाप को भी नालायक बच्चों को देख ऐसे होता है। जी जैसे जलता है। ऐसा नालायक बच्चा तो नहीं पैदा होता था तो अच्छा। यह भी बाप है। बच्चे जानते हैं बाप हमको शिक्षा दे रहे हैं; परंतु कोई-2 नालायक ऐसे हैं जो बिल्कुल समझते ही नहीं। बेहद का बाप हमको समझा रहे हैं। वह निश्चय नहीं, नशा नहीं। तुम बच्चों का दिमाग कितना ऊँच होना चाहिए। हम कितने ऊँच ते ऊँच बाप के बच्चे हैं! सेंट परसेंट नालायक से सेंट परसेंट लायक बनना चाहिए; परंतु 100% नालायक से भी 101% नालायक बन जाते हैं। बाबा कितना समझाते हैं अंदर में सोचो हम कितने ऊँच ते ऊँच बाप के बच्चे हैं। हमारा करेक्टर कितना ऊँच होना चाहिए। जो इन देवी-देवताओं की महिमा है वह हमारी होनी चाहिए। प्रजा की थोड़ी ही महिमा है। एक ल॰ना॰ को ही दिखाया है। तो बच्चों को कितनी अच्छी रीत सर्विस करनी चाहिए। इन (ल॰ना॰) दोनों ने भी सर्विस की है ना। दिमाग कितना ऊँच चाहिए। कई बच्चों में तो कोई फर्क है नहीं। माया से हार खा लेते हैं तो और ही जास्ती बिगड़ते हैं। नहीं तो अंदर में कितना नशा रहना चाहिए। हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। बाप कहते हैं आप समान बनाते रहो। सभी को मेरा परिचय देते रहो। सर्विस से ही शोभा पावेंगे तब ही बाप के भी दिल पर चढ़ेंगे। बच्चा वह जो बाप के दिल पर चढ़ा हुआ है। बाप का बच्चों पर कितना लव रहता है। बच्चों को सिर पर चढ़ाते हैं। इतना मोह होता है; परंतु वह तो है हद का, मायावी मोह। यह तो है बेहद का। ऐसा कोई बाप होगा जो बच्चों को देख खुश न हो। माँ-बाप को तो अथाह खुशी होती है। यहाँ जब बैठते हो तो समझना चाहिए बाबा हमको पढ़ाते हैं। बाबा हमारा ओबीडियंट सर्वेंट है। टीचर भी है। बेहद के बाप ने ज़रूर कोई सर्विस की होगी तब तो गायन है ना। कितना वण्डरफुल बातें हैं! कितनी उनकी महिमा की जाती है! यहाँ बैठे हो तो भी बुद्धि में नशा रहना चाहिए। सन्यासी तो हैं ही निवृत्ति मार्ग वाले। उन्हों का धर्म ही अलग है। यह भी बाप समझाते हैं। तुम थोड़े ही जानते थे सन्यास मार्ग को। तुमको तो गृहस्थ आश्रम रहते भक्ति आदि करनी है। तुमको ही फिर ज्ञान मिलता है। उनको तो ज्ञान मिलने का है नहीं। तुम कितना ऊँच पढ़ते हो और बैठे कितना साधारण हो नीचे! दिलवाला मंदिर में भी तुम नीचे तपस्या में बैठे हो। ऊपर में वैकुण्ठ खड़ा है। तो ऊपर में वैकुण्ठ को देख मनुष्य समझते हैं स्वर्ग ऊपर में ही होता है। तो तुम बच्चों को अंदर में यह सभी बातें आनी चाहिए कि यह स्कूल है। हम पढ़ रहे हैं। कहाँ चक्र लगाने जाते हो तो भी बुद्धि में यही ख्यालात चलने से बहुत मज़ा आवेगा। बेहद के बाप को तो दुनिया में कोई नहीं जानते हैं। बाप के बच्चे बनकर और बाप के बायोग्राफी को न जाने, ऐसा बुद्धू कब देखा? न जानने के कारण कह देते हैं सर्वव्यापी है। कुत्ते-बिल्ले, पत्थर-भित्तर में है। बाप की इतनी ग्लानि करना, इसको महान मूर्ख कहा जावेगा। मनुष्य क्या-2 कहते रहते हैं। भगवान को ही कह देते आपे ही पूज्य आपे ही पुजारी। फिर ठिक्कर-भित्तर में पूजा होती है क्या? तो तुम बच्चों को अंदर में कितनी खुशी होनी चाहिए। हम कितने ऊँच, पूज्य थे। फिर हम ही पुजारी बने हैं। जो शिवबाबा तुमको इतना ऊँच बनाते हैं फिर ड्रामा अनुसार तुम ही उनकी पूजा शुरू करते हो। इन बातों को दुनिया थोड़े ही जानती है कि भक्ति कब शुरू होती है। बाप बच्चों को रोज़-2 समझाते रहते हैं। यहाँ बैठे हो तो

अंदर में खुशी होनी चाहिए ना हमको कौन पढ़ाते हैं! भगवान आकर पढ़ाते हैं। यह तो कब सुना भी नहीं होगा। वह तो समझते हैं गीता का भगवान कृष्ण है। तो कृष्ण ही पढ़ाता होगा। अच्छा कृष्ण भी समझो तो भी कितनी ऊँच अवस्था होनी चाहिए। अभी तुम समझते हो कृष्ण तो मनुष्य था। उनकी हो गई मनुष्य मत। एक किताब भी है मनुष्य मत और ईश्वरीय मत का। देवताओं को तो मत लेने की दरकार ही नहीं है। मनुष्य चाहते हैं ईश्वर की मत। देवताओं को तो मत अगले जन्म में मिले थे, जिससे ऊँच पद पाया। अभी तुम बच्चों को श्रीमत मिल रही है श्रेष्ठ बनने लिए। ईश्वरीय मत और मनुष्य मत में कितना फर्क है। श्रीमत और मनुष्य मत का किताब बड़ा फर्स्ट क्लास है; परंतु कब कोई ने ऐसा समाचार नहीं दिया है हम फलाने से मिले, उनको यह किताब देकर आये। तो उनका भी ध्यान जावे मनुष्य क्या कहती है, ईश्वरीय मत क्या कहती है। तो ज़रूर ईश्वरीय मत पर चलना पड़े। कोई से मिलने जाते हैं तो कुछ भी ले नहीं जाते। जैसे कि बुद्धू जाते हैं। याद ही नहीं रहता किसको सौगात देनी चाहिए। यह मनुष्य मत और ईश्वरीय मत का कॉन्ट्रास्ट बहुत ज़रूरी है। तुम मनुष्य थे तो उस मत और अभी जो ईश्वरीय मत मिलती है उनमें कितना फर्क है! एक बाप की श्रीमत बिगर बाकी सभी है आसुरी मत। तो किताब आदि भी आसुरी ही बनाई है। कितने ढेर शास्त्र हैं। सभी शास्त्र मनुष्यों के ही बनाये हुये हैं। बाप कोई शास्त्र आदि पढ़कर आते हैं क्या? बाप कहते हैं मैं कोई बाप का बच्चा हूँ क्या, मैं कोई गुरु का शिष्य हूँ क्या, जिससे सीखा हुआ हूँ। तो यह भी सभी बातें समझाना चाहिए। भल यह जानते हैं कि बंदर बुद्धि हैं; परंतु मंदिर लायक बनने वाले भी हैं ना, आस्ते-2 निकलते रहते हैं। ऐसे बहुत मनुष्यमत पर चलते हैं। फिर तुम सुनाते हो कि हम ईश्वरीयमत पर क्या बनते हैं। वह हमको पढ़ाते हैं। भगवानुवाच। हम उनसे पढ़ने जाते हैं। हम रोज़ एक घंटा, पौना घंटा जाते हैं। क्लास में जास्ती टाइम भी लेना नहीं चाहिए। याद की यात्रा तो चलते-फिरते हो सकती है। इसके लिए तो खास बैठना भी फालतू है। ज्ञान और योग दोनों ही बहुत सहज है। चलते-फिरते, ट्रेन में बैठे भी किसको पढ़ा सकते हो। पढ़ाई तो सहज है। अलफ का है ही एक अक्षर। भक्ति मार्ग के तो ढेर शास्त्र आदि हैं। इकट्ठा करो तो सारा शास्त्र घरों(घर शास्त्रों) से भर जाये। कितना इन पर खर्चा हुआ होगा! अभी बाप तो बहुत सहज बताते हैं। सिर्फ बाप को याद करो। तो बाप का वर्सा है ही स्वर्ग की बादशाही। एमआबजेक्ट सामने है। बाप को कुछ भी बोलने का नहीं है। सिर्फ कहते हैं मनमनाभव। बस। मद्याजीभव भी कहने की दरकार नहीं। तुम विश्व के मालिक थे ना। भारत हेविन था ना। क्या तुम भूल गये हो? यह भी ड्रामा की भावी कहा जाता है। अभी बाप आया हुआ है। बाप हर 5000 वर्ष बाद आते हैं पढ़ाने। बेहद के बाप का वर्सा ज़रूर स्वर्ग नई दुनिया का होगा ना। यह तो बिल्कुल सहज बात है। लाखों वर्ष कह देने से जैसे बुद्धि का ताला लग गया है। ताला खुलता ही नहीं है। ऐसी मूर्खता का ताला लगा हुआ है जो इतनी सहज बात भी समझते नहीं हैं। बाप समझाते हैं एक ही बात बस है। जास्ती कुछ पढ़ना न चाहिए; परंतु ज्ञान सागर है ना। और यह स्कूल है। स्कूल में सेकण्ड में कुछ भी पढ़ा थोड़े ही जाता है। एक सेकण्ड में तुम किसको भी स्वर्गवासी बना सकते हो; परंतु ज्ञान तो इतना देते हो जो सागर को मस बनाओ, सारा जंगल कलम बनाओ तो भी अंत नहीं हो सकता। ज्ञान को धारण करते इतना समय हुआ है। भक्ति को आधा कल्प हुआ। ज्ञान तो तुमको एक ही जन्म में मिलता है। शिवजयंती भी है। बाप तुमको पढ़ा रहे हैं नई दुनिया के लिए। वह जिस्मानी स्कूल तुम कितने पढ़ते हो। 5 वर्ष से लेकर 20/22वर्ष तक पढ़ते रहते हैं। और ही गिरते रहते हैं। कमाई थोड़ी और खर्चा बहुत करेंगे तो घाटा पड़ जावेगा ना। बाप कितना सालवेंट बनाते हैं। फिर कितना इनसालवेंट बन जाते हैं। अभी भारत का हाल देखो क्या है! फलक से समझाना चाहिए। माताओं को खड़ा होना चाहिए। तुम्हारा ही गायन है वंदेमात्रम्। धरती को वंदेमात्रम् नहीं कहा जाता। वंदे मनुष्य को कहा जाता है। बच्चे जो बंधन मुक्त हैं वही यह सर्विस करते हैं। वह भी जैसे कल्प पहले बंधन मुक्त हुये हैं वैसे होते रहते हैं। अबलाओं पर कितनी अत्याचार होती है। जो जानते हैं हमको बाप मिला है, तो समझते हैं बस अभी तो बाप की ही सर्विस करनी है। बंधन हैं ऐसे कहने वाले रीढ़-बकरियाँ हैं। गवर्मेंट

कब कह न सके तुम ईश्वरीय सर्विस करो। बात करने की हिम्मत चाहिए। जिनमें ज्ञान है वही तो इतने बंधनमुक्त हो सकते हैं। हम रूहानी सेवा करने चाहते हैं। रूहानी बाप हमको पढ़ा रहे हैं। एक जज हजाम होगा, दूसरा तीसरा जज (सु)नेगा। छोटे कोर्ट छोटा हजाम। बड़े कोर्ट में बड़े हजाम निकल पड़ते हैं। आगे तो राजा पास केस जाता था। आजकल तो राजा है नहीं। प्रज़ीडेंट का भी नहीं चलता है। उनकी जजमेंट को भी फिर जज लोग डिसमिस कर देते हैं। (नानावती का मिसाल) प्रज़ीडेंट ने छुट्टी दी। फिर जजों ने कायदा निकाला, फिर उनको जेल में डाल दिया। तो इसको क्या कहा जावेगा? जजमेंट ठीक नहीं देते तो जैसे कि हजाम हैं। बाप को जिसने ने(न) जाना वह नम्बरवन हजाम। पुकारते भी रहते हैं ओ गॉड फादर, हे परमपिता परमात्मा; परंतु उनको जानते कुछ भी नहीं। वह (क्रिश्चयन लोग) फिर भी कहते हैं लिबरेट करो, गाइड बनो। भारतवासियों से फिर भी उन्हों की समझ अच्छी है। तुम बच्चों में जो अच्छे समझदार हैं उनको सर्विस का बहुत शौक रहता है। समझते हैं ईश्वरीय सर्विस से बहुत लॉटरी मिलती है। कई तो लॉटरी आदि को समझते ही नहीं हैं। वहाँ भी जाकर दास-दासियाँ बनेंगी। दिल में समझते हैं अच्छा दासी ही सही। चण्डाल ही सही। स्वर्ग में तो होंगे ना। उन्हों की चलन भी ऐसी देखने में आती है। तुम समझते हो बेहद का बाप हमको समझा रहे हैं। यह दादा भी समझते हैं, बाप इन द्वारा बच्चों को पढ़ा रहे हैं। कोई तो इतना भी समझते नहीं। यहाँ से बाहर निकले खलास। यहाँ बैठे भी जैसे समझते ही नहीं। टीचर का कुछ सुनते ही नहीं। बुद्धि बाहर भटकती, धक्का खाती रहती है। एक भी भूत निकलता नहीं है। पढ़ाने वाला कौन और बनते क्या हैं! साहुकारों के भी दास-दासियाँ बनेंगे। अभी भी साहूकारों पास कितने नौकर-चाकर रहते हैं। सर्विस पर तो एकदम उड़ान चाहिए। तुम बच्चे शांति स्थापन अर्थ निमित्त बने हुये हो। विश्व में सुख-शांति स्थापन कर रहे हो। प्रैक्टिकल में तुम जानते हो हम श्रीमत पर स्थापना कर रहे हैं। इसमें अशांति कोई होनी न चाहिए। बाबा यहाँ भी बहुत ऐसे-2 अच्छे-2 घर देखे हुये हैं। एक घर 6/7 बहू इकट्ठे। इतना प्यार से रहते हैं बिल्कुल शांति लगी पड़ी है। बोलते थे हमारे पास तो स्वर्ग लगा पड़ा है। कोई खिट-2 की बात ही नहीं। सभी आज्ञाकारी हैं। उस समय बाबा को बहुत सन्यासी ख्यालात के थे। दुनिया से वैराग्य रहता था। अभी तो यह है बेहद का वैराग्य। कुछ भी याद न रहे। बाबा तो नाम सभी भूल जाते हैं। बच्चे कहते हैं बाबा आप हमको याद करते हो। बाबा कहते हैं हमको तो सभी को भूलना है। न बिसरो न याद रहो। बेहद का वैराग्य है ना। सभी को भूलना ही है। हम यहाँ के रहने वाले थोड़े ही हैं। बाबा आया हुआ है अपना स्वर्ग की बादशाही देने। बेहद का बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। यह बैज बहुत अच्छा है समझाने लिए। कोई मांगे बोलो, समझकर लो। इस बैज को समझने से तुमको विश्व की बादशाही मिल सकती है। शिवबाबा इस ब्रह्मा द्वारा डायरैक्शन देते हैं मुझे याद करो तो तुम यह बनेंगे। गीता वाले जो हैं वह अच्छी रीत समझ सकेंगे, जो देवता धर्म के होंगे। कोई-2 प्रश्न पूछते हैं देवताएँ गिरते क्यों हैं? अरे, यह चक्र फिरता रहता है। पुनर्जन्म लेते-2 नीचे तो आवेंगे ना। चक्र को तो फिरना ही है। हरेक के दिल में यह आता ज़रूर है। हम सर्विस क्यों नहीं कर सकते हैं। ज़रूर मेरे में खामी है। माया के भूतों ने नाक से पकड़ा हुआ है। अभी तुम बच्चे समझते हो हमको अभी घर जाना है। फिर नई दुनिया में राज्य करेंगे। तुम मुसाफिर हो ना। दूर देश से यहाँ आकर पार्ट बजाते हो। अभी तुम्हारे ... बुद्धि में है हमको अमरलोक जाना है। यह मृत्युलोक खलास हो जाना है। बाप समझाते तो बहुत हैं। अच्छी रीत धारण करना है। इसको फिर उगारते रहो। यह भी बाप ने समझाया है कर्मभोग की बीमारी उथल खावेगी, माया सतावेगी; परंतु मूँझना न है। थोड़ा ही कुछ होता है तो हैरान हो जाते हैं। बीमारी में मनुष्य और ही जास्ती भगवान को याद करते हैं। बंगाल में तो जब कोई बहुत बीमार होता है तो उनको कहते हैं राम राम बोलो। देखते हैं अभी मरने पर है तो झट गंगा पर जाये हरि बोल-3 करते हैं। फिर उनको ले आकर जलाने की क्या दरकार है? गंगा में अंदर ही डाल दो ना। कच्छ-मच्छ ..... का शिकार हो जावेगा। पारसी लोग कोई मरते हैं तो लाश को कुएँ पर रख देते हैं। अच्छा, गुडमॉर्निंग।